स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भंडारी का कथा साहित्य

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छ.ग. के कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध की रूपरेखा

निर्देशक	सहनिर्देशक	शोधार्थी
डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता	डॉ. श्रीमती श्रद्धा चंद्राकर	प्रियंका
सहा. प्राध्यापक (हिन्दी)	प्राध्यापक, हिन्दी विभाग	
शा. दानवीर तुलाराम	शा. विश्वनाथ यादव तामस्कर	
महाविद्यालय उतई, दुर्ग (छ.ग.)	स्व. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग)	

प्राचार्य
शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
Principal
Govt. V.Y.T P G Autonomous
College Durg (C. G.)

शोध केन्द्र

शा. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

<u>शोध रूपरेखा</u>

1. शोध प्रबंध का शीर्षक
2. प्रस्तावना
3. शोध का अध्यायीकरण
4. पूर्व में किये गये शोध कार्य की संक्षिप्त समीक्षा
5. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देष्य
6. संबंधित क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण कार्य
7. शोध कार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रविधि
8. प्रस्तावित शोध कार्य के आशातीत परिणाम
9. आधार ग्रंथ

1. शोध प्रबंध का शीर्षक :–

स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भंडारी का कथा साहित्य

2. प्रस्तावना :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक आदि स्तर पर बदलाव आया। भारतीय संविधान द्वारा सभी को समानता को अधिकार प्राप्त हुआ आज भी स्त्री–पुरूष दोनों सभी क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रहे हैं। परन्तु लोगो की मानसिकता पूरी तरह से विकसित नहीं हुई है। जिसके कारण भारत की बदलती परिस्थिति में समाज के समक्ष अनेक समस्याएँ आ रही है। जैसे निर्धनता, बेकारी, किसानों की दुर्दशा नारी का शोषण, साम्प्रदायिक भेद भाव आदि। सब इतने भयानक होने लगे। फलस्वरूप स्वस्थ समाज की रचना असम्भव होने लगी है। औद्योगिकीकरण ने सामाजिक व्यवस्था को ज्यादा प्रभावित किया। ग्रामीण जनता शहरों की ओर भागने लगी। संयुक्त परिवार की नींव हिल गई, भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्था के कारण सरकार की प्रायः सभी योजनाएँ कागजों तक सीमित रह गयी हैं। नारी अधिक आत्मनिर्भर होने लगी। पति अब स्वामी नहीं जीवन साथी बन गया। नर नारी सम्बन्ध भी अधिक यान्त्रिक बन गया। आधुनिक बोध से अकेलेपन,यौन विसंगतियों, विद्रोह, कुण्ठा एवं मूल्यों का ह्रास आदि समस्याएँ विकराल रूप लेने लगी। आवश्यकता इस बात की है कि समाज इन पर विचार करें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्री की दशा में बदलाव आया। भारतीय संविधान के अनुसार स्त्री को पुरूष के समकक्ष अधिकार प्राप्त हुए। उनकी सामाजिक, शैक्षणिक और राजनैतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओ और विकासत्मक कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। समकालीन परिवेश में नारी जागरूक व शोषण के विरूद्ध प्रतिकार करने व मन के कोने में झाँकने वाली, अपनी अस्मिता और व्यक्तित्व के प्रति सजग दिखाई देती है। साथ ही एक ओर नारी अपने पारम्परिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए आधुनिक परिवेश में जीने का प्रयत्न कर रही है, तो दूसरी ओर आधुनिक बनकर नैतिकता के प्राचीन मानदण्ड़ो की अवहेलना कर रही है। परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है।

निःस्संदेह कानूनी दृष्टि में स्त्रियों को पूर्ण समानता मिल चुकी है। लेकिन जमीनी हकीकत में अभी बहुत अन्तर है। आज जरूरी है कि हमारा समाज अपनी सोच को बदले।

साहित्य की सदैव यह भूमिका रही है कि उसने सामाजिक परिदृश्य को अपने लेखन का हिस्सा बनाया। इतिहास इस बात का साक्षी है। हम अपने अतीत मे झांकें तो वैदिक काल से लेकर आज तक का साहित्य इस बात का प्रमाण है इन साहित्यकारों ने न केवल इन समस्याओं को उभारा वरन् इन समस्याओं से जूझते हुए एक परिवर्तन का रास्ता भी दिखाया है। मन्नू भंडारी भी ऐसी ही एक सजग रचनाकार के रूप में हमारे समक्ष हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल की महिला कथाकारों में मन्नू भंडारी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से स्वतंत्र भारत के नारी जीवन की वास्तविक स्थिति को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से एक ओर नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर आधुनिकता और परम्परा के बीच बेचैन पड़ी नारी सभी प्रकार के शोषण का शिकार होने वाली नारीमन की टूटन एवं घुटन को नई नौकरी, स्त्री सुबोधिनी, आपका बंटी आदि में उभारा है। स्थापित नैतिक मूल्यों को नकारने वाली नारी का चित्रण त्रिशंकु, यही सच है, ऊँचाई कहानियों में किया है। समाज और परिवार का प्रतिनिधित्व करती हुई नारी को स्त्री सुबोधनी, क्षय में उभारा है। एक लेखिका होने के नाते उन्होने सहज रूप से नारी के तन–मन की सच्चाई को यथार्थ रूप में उभारने की कोशिश की किन्तु उनका दृष्टिकोण नारीवाद सम्बंधित अतिवादों से विमुक्त है। इसका प्रमाण खुद उनकी रचनाएँ है। स्पष्ट कि स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में मन्नू भंडारी का कथा साहित्य स्त्रियों की स्थिति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

3. मन्नू भंडारी की रचनाओं में निहित विभिन्न पक्षों को परखने के लिए प्रस्तावित शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर समझने की चेष्टा करेगें।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भंडारी का कथा साहित्य

प्रस्तावना :–

प्रथम अध्याय :– स्वातंत्र्योत्तर भारत का स्त्री विषयक यथार्थ और हिन्दी कथा साहित्य

द्वितीय अध्याय :– मन्नू भंडारी–व्यक्तित्व और कृतित्व

तृतीय अध्याय :— स्वातंत्र्योत्तर भारत का स्त्री विषयक यथार्थ और मन्नू भंडारी की कहानियाँ

चतुर्थ अध्याय :— स्वातंत्र्योत्तर भारत का स्त्री विषयक यथार्थ और मन्नू भंडारी का औपन्यासिक साहित्य

पंचम अध्याय :— स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य के स्त्री विषय यथार्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से मन्नू भंडारी का योगदान

उपसंहार :— परिशिष्ट—साक्षात्कार

आधार ग्रंथ सूची

4. पूर्व में किये गये शोध कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :—

आधुनिक हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ पीढ़ी के महत्वपूर्ण और अतिप्रिय कथाकार के रूप में मन्नू भण्डारी सुशोभित है। मन्नू भण्डारी का रचना संसार विस्तृत है। उनके साहित्य पर बहुत से पी—एच.डी. कार्य हुए हैं जो निम्नानुसार है :—

1. कोच्चुराणी जॉसफ ने महात्मा गॉधी विश्वविद्यालय से 'मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी मनोविज्ञान' शीर्षक से पी—एच.डी. की। इसमें उन्होंने नारी के अंतर्मन की स्थिति, द्वन्द्व को मन्नू भंडारी की कहानियों के माध्यम से दिखाया हैं।
2. चारूमती देवी सी. एस. ने हैदराबाद विश्वविद्यालय से 'मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में यथार्थ बोध' शीर्षक से शोध कार्य किया हैं।
3. मीरा जलान के द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय से ' स्वातंत्र्योत्तर बदलता समाज और मन्नू भंडारी का कथा साहित्य' शीर्षक से शोध कार्य किया गया। जिसमें मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद की बदलती भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विस्तृत फलक को उभारने का कार्य किया गया हैं।
4. कल्पना भट्ट द्वारा सरदार पटेल विश्वविद्यालय से 'मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी संवेदना' शीर्षक से पी—एच.ड़ी सम्पन्न किया गया है। जिसमें उन्होंने मन्नू भंडारी की कहानियों को नारी के सुख—दुख, आशा— निराशा, आकांक्षा, लालसा आदि संदर्भ में आंकने का प्रयास किया हैं।
5. डॉ. षीना ईप्पन द्वारा महात्मा गँधी विश्वविद्यालय से 'मन्नू भण्डारी का रचना संसार मध्यवर्गीय जीवन परिप्रेक्ष्य में' शीर्षक से पी—एच.डी. की गई उन्होंने बदलने भारतीय

समाज का स्वरूप और उससे प्रभावित मध्यवर्गीय जीवन में आने वाले बदलाव को कथा साहित्य के माध्यम से उभारा हैं।

मेरी जानकारी के अनुसार मन्नू भण्डारी के साहित्य पर उपर्युक्त शोध कार्य हुये हैं। मेरा विषय 'स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य हैं। जो पूर्व में किए शोध कार्य से सर्वथा भिन्न हैं। मेरी जानकारी के अनुसार अभी तक पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छ.ग. में मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य पर किसी प्रकार का शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ हैं यह प्रस्तावित शोध कार्य स्वतंत्र्योत्तर भारत में स्त्री विषयक यथार्थ एवं मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य जो पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के अंतर्गत सम्पन्न किया जाएगा, यह शोध कार्य मन्नू भण्डारी पर आधारित प्रथम कार्य होगा जो समाज तथा साहित्य के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

5. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य :–

आजादी के बाद के दशक में जिन कथाकारों ने अपनी अलग पहचान बनायी और हिन्दी कहानी, उपन्यासों को नयी दिशा दी उनमें मन्नू भण्डारी का नाम विशिष्ट है। इन्होंने नारी मनोविज्ञान को लोगों के समक्ष बड़ी ही बारीकी से प्रस्तुत किया है। प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य स्वतंत्र भारत के बदलते परिवेश में परम्परा के बीच बेचैन पड़ी नारी की आशाओं, आकांक्षाओं और लालसाओं, दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों पति के दोहरे चरित्र को सहती हुई, प्रतिपल अपमान और तिरस्कार के कड़वे घूँट पीती हुई नारी के अंतर्मन की सच्चाई, नारी की अस्मिता, उसकी अपनी पहचान और सामाजिक जड़नाओं से लड़ने के उसके साहस को पाठकों के समक्ष रखकर स्त्री के यथार्थ को प्रतिबिंम्बित करना है। इस शोध के माध्यम से उसकी इस परिस्थिति के पीछे के कारणों को जानने तथा उसके निवारण का भी प्रयास किया जाएगा।

6. संबंधित क्षेत्र मे किए गए महत्वपूर्ण कार्य :–

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ के अंतर्गत अनेक महिला कथाकारों की रचनाओं पर शोध कार्य संपन्न किए गये हैं। जैसे ''कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी पतन'' कुमारी ममता के द्वारा सम्पन्न किया गया। ''हिन्दी कहानी के आठवें दशक में नारी पतन का अनुशीलन '' यह शोध कार्य कुसुम ठाकुर के द्वारा सम्पन्न किया गया। ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथाकारों की रचनाओं में महिला समस्या निवारण''

श्रीमती किरण अग्रवाल द्वारा किया गया ''सुश्री महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी व्यक्तित्व का अनुशीलन'' यह शोध कार्य मंदाकिनी तिवारी के द्वारा सम्पन्न किया गया। परन्तु इस विश्वविद्यालय में मन्नू भण्डारी की कहानी व उपन्यास पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरा उद्देश्य लोगों तक उनके कथा साहित्य को पहुँचाना है। जिन्होंने समाज में महिलाओं के वस्तु स्थिति को कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

7. शोध कार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आलोचनात्मक, विवेचनात्मक, साक्षात्कार प्रविधियों का उपयोग किया जाएगा। निश्चित ही उपर्युक्त प्रविधियाँ शोध कार्य के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण सहयोग देगी।

8. प्रस्तावित शोध कार्य के आशातीत परिणाम :–

प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत के बदलते हुए परिवेश में स्त्रियों के समक्ष आ रही नई चुनौतियों के कारणों, निवारणों को मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के मध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा जिससे समाज नारी के अंतर्मन की सच्चाई से अवगत होगा और उन्हें नई दृष्टि मिलेगी।

9. आधार ग्रंथ :–

1 भण्डारी, मन्नू. मै हार गई, दिल्ली : अक्षर प्रकाशन, 1980

2 भण्डारी, मन्नू. तीन निगाहों की एक तस्वीर, इलाहाबाद : श्रमजीवी प्रकाशन, 1951

3 भण्डारी, मन्नू. यही सच है, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1996

4 भण्डारी, मन्नू. एक प्लेट सैलाब, दिल्ली : अक्षर प्रकाशन, 1968

5 भण्डारी, मन्नू. त्रिशंकु, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन,1995

6 भण्डारी, मन्नू. सप्तपर्णा, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1982

7 भण्डारी, मन्नू. प्रतिनिधि कहानियाँ, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1994

8 भण्डारी, मन्नू. श्रेष्ठ कहानियाँ, दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1991

9 भण्डारी, मन्नू. मेरी प्रिय कहानियाँ, दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्स, 1992

10 भण्डारी, मन्नू. एक इंच मुस्कान, दिल्ली : राजपाल 1961

11 भण्डारी, मन्नू. आपका बंटी, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1996

12 भण्डारी, मन्नू. महाभोग, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1996

संदर्भ ग्रंथ :–

1 मंत्री, उषा. हिन्दी उपन्यास में पारिवारिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1991

2 प्रेमचंद्र, गोदान. इलाहाबाद : सरस्वती प्रेस, 1964

3 यादव, राजेन्द्र. हिन्दी कहानी स्वरूप एवं संवेदना, दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1977

4 वाजपेयी, नंददुलारे. आधुनिक साहित्य, इलाहाबाद : भारती भण्डार 1961

5 अश्क, उपेन्द्रनाथ. हिन्दी कहानी एक अन्तरंग परिचय, इलाहाबाद : नीलाम प्रकाशन, 1967

6. मदान, इंद्रनाथ. नई कहानी दिशा, दशा सम्भावना, जयपुर : अपोलो पब्लिकेशन, 1966

7. मेहता, आशा. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में वैचारिकता, नई दिल्ली : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, 1988

8 कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका, दिल्ली : अक्षर प्रकाशन, 1966

9. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, दिल्ली : दिनमान प्रकाशन 1900

10 बलराम, समकालीन हिन्दी कहानी, दिल्ली : दिनमान प्रकाशन 1900

11 राजूरकर, अनीता. कथाकार मन्नू भंण्डारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1987

12 दास, गणेश. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप, कानपुर : अक्षय प्रकाशन, 1992

13 वाजपेयी, नंददुलारे. बीसवी शताब्दी हिन्दी साहित्य की भूमिका, प्रयाग : हिन्दी परिषद, 1952

14 कपूर, प्रमीला. भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ, दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 1976

15 सिंह, मंजुलता. हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो, 1971

10. **शोधार्थी के प्रकाशित शोध पत्र का विवरण :–**

शोधार्थी का कोई शोध पत्र प्रकाशित नहीं हुआ है।

निर्देशक	**सहनिर्देशक**	**शोधार्थी**
डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता	डॉ. श्रीमती श्रद्धा चंद्राकर	प्रियंका
सहा. प्राध्यापक (हिन्दी)	प्राध्यापक, हिन्दी विभाग	
शा. दानवीर तुलाराम	शा. विश्वनाथ यादव तामस्कर	
महाविद्यालय उतई, दुर्ग (छ.ग.)	स्व. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग)	

प्राचार्य

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर

स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

Principal

Govt. V.Y.T P G Autonomous

College Durg (C. G.)